कक्षा
12

प्राकृत भाषा एवं साहित्य

प्राकृत भाषा एवं साहित्य
कक्षा 12

प्राकृत भाषा
एवं
साहित्य

(कक्षा 12)

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान अजमेर

पाठ्यपुस्तक निर्माण समिति

पुस्तक– प्राकृत भाषा एवं साहित्य

(कक्षा 12)

संयोजक :- **प्रो. उदय चन्द्र जैन (सेवानिवृत्त)**
जैनविद्या एवं प्राकृत विभाग
मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर

लेखकगण :- **1. डॉ. ज्योति बाबू जैन**
सहायक आचार्य
जैनविद्या एवं प्राकृत विभाग
मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर

भूमिका

पीउस–पावणं–कव्वं, पाइय–कव्वं सुणेंति जाणेंति य।
पाउस–पवित्त–णीरं, सरदे सारदं सया रमे।।

प्राकृत भाषा का आधार बनाकर महावीर और ने बुद्ध जन–कल्याण किया। उनके वचनों का संकलन कर साहित्य का रूप देने छह सौ वर्ष से अधिक का समय लगा। महावीर वचन अर्धमागधी और शौरसेनी इन दो भाषाओं में सामने आए। नाटककारों ने अपनी नाट्य विद्या के पात्रों द्वारा जन–साधारण जनों में प्रचलित शब्द, भावाभिव्यजना, हास्य, परिहास आदि रूपों में प्रथम शताब्दी से लेकर आधुनिक इक्कीसवीं शताब्दीं में भी जो भी प्राकष्त में लिखा गया था लिखा जा रहा वह जन साधारण जनों की विचारधारा, प्रवर्षत्तियों, कोमलभावनाओं एवं समाज के मूल्यों को स्थापित कर रहे हैं।

आगमसूत्र, त्रिपिटक आदि के वचनों में लोकनीति, धर्म, दर्शन, तात्त्विक चिंतन, भौगोलिक वातावरण, नक्षत्र, रीति–नीति,गणित, विज्ञान, रस–रसायण, भौतिकी, प्रकर्षति का सर्वस्व, वनस्पति, जल आदि के साथ ऐसे–ऐसे रहस्य है जो आज क्या आने वाले समयों में उनकी विशेषताओं का कर पाना संभव नहीं लगता है। समालोचक विचारक एवं अनुसंधानरत प्राकृत में हस्त लिखित लाखों प्रतियों के पर्यवेक्षण में हजारों व्यक्ति भी जुड़ जाएं तो भी उन प्राकृत ग्रंथों को सामने लाने में समर्थ नहीं हो सकते हैं।

प्राकृत भाषा का विशाल साहित्य सांस्कर्षतिक मूल्यों, ऐतिहासिक परिशीलन आदि में सदैव सहायक रहा है। हम सौभाग्यशाली है कि माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान से लेकर बी.ए., एम. ए., एम.फिल., पी–एच.डी. आदि के क्षेत्र में प्राकृत भाषा और उसके साहित्य को महत्त्व दिया जा रहा है। ऐसी क्रियाशीलता के लिए विभिन्न विद्यालय, महाविद्यालय एवं विश्वविद्यालय यदि कदम उठा रहे हैं तो प्राकष्त–भाषा एवं साहित्य के लिए जाना–पहचाना समाज की सहभागिता आवश्यक है। मैं अकेला महावीर की भावना को इस इक्कीसवीं शताब्दी में भी मानस–वृत्तियों में प्राकृत रस कितना घोल सकता हूँ?अतः सम्पूर्ण महावीर के अनुयायियों द्वारा संचालित विद्यालय, महाविद्यालय संस्थान आदि में प्राकृत को स्थान यदि जाता है तो हमारी संस्कृति के लिए नये–नये आयाम मिल सकते हैं। अध्ययन–अनुशीलन आदि से बहुत कुछ संभव है। मैं प्राचीन, आधुनिक विचारकों आदि के प्रति विनम्र आभार व्यक्त करता हूँ।

मैं कमियों और भूल के लिए क्षमा चाहता हूँ।

–संयोजक एवं लेखकगण

अनुक्रमिणका

प्राक्–कथन

1. पइयगज्जसंगहा – 1
निम्नांकित कथाएं
(क) पंचसालिकणाणं सत्ती 1
(ख) ससुरगेहवासीणं चउजामाईकहा। 3
(ग) सिप्पिपुत्तस्सकहा। 7
(घ) षट्खण्डागम लेखन कथा। 11

2. अगड़दत्तचरियं – 14–26

3. अशोक के चौदह शिलालेख – 27
प्रथम शिलालेख 27
द्वितीय शिलालेख 28
द्वादश शिलालेख। 29

4. प्राकृत व्याकरण के प्रमुख नियम– 31
कारक 31
संज्ञा प्रकरण 31
सर्वनाम प्रकरण 42
क्रिया प्रकरण 46
कृदन्त 50

5. प्राकृत साहित्य के इतिहास का परिचय – 57
आगम ग्रन्थ 60
उपांग – 61
आगमों पर व्याख्या साहित्य 63
स्थापत्य की दृश्टि से कथा के प्रकार 65
प्राकृत चरित्र काव्य 66
प्राकृत महाकाव्य 68
प्राकृत शिलालेख 69
आगम कथा एवं चरित काव्य–ग्रंथों पर सामान्य परिचयात्मक प्रश्न। 72

6. संदर्भ ग्रंथ – 84

पाठ्यक्रम
प्राकृत भाषा

समय 3.15 घण्टे | पूर्णांक–100

1. पइयगज्जसंगहा – 20
   निम्नांकित कथाएं
   (क) पंचसालिकणाणं सत्ती
   (ख) ससुरगेहवासीणं चउजामाईकहा।
   (ग) सिप्पिपुत्तस्सकहा।
   (घ) षट्खण्डागम लेखन कथा।
   उपरोक्त कथाओं का सार, गद्यांशों का हिन्दी अनुवाद तथा कथाओं पर आधारित सामान्य प्रश्न।

2. अगड़दत्तचरियं – 30
   (देवेन्द्र गणि) गाथा 1 से 73 तक (अनुवाद एवं व्याख्या)।
   उपरोक्त कथाओं का सार, गद्यांशों का हिन्दी अनुवाद तथा कथाओं पर आधारित सामान्य प्रश्न।

3. अशोक के चौदह शिलालेख – 15
   प्रथम शिलालेख
   द्वितीय शिलालेख
   द्वादश शिलालेख।
   उपरोक्त शिलालेखों का सार, गद्यांशों का हिन्दी अनुवाद तथा कथाओं पर आधारित सामान्य प्रश्न।

4. प्राकृत व्याकरण के प्रमुख नियम– 20
   संज्ञा
   सर्वनाम
   क्रिया
   कृदन्त

5. प्राकृत साहित्य के इतिहास का परिचय – 15
   आगम ग्रन्थ, कथा एवं चरित
   काव्य–ग्रंथों पर सामान्य परिचयात्मक प्रश्न।

नर्धारित पुस्तकें –

1. पाइगज्जसंगहो – डॉ. राजाराम जैन, प्राच्य भारती प्रकाशन, आरा (संस्करण–1987)
2. अगड़दत्तचरियं – डॉ. राजाराम जैन, पंकज प्रकाशन, महाजन टोली नं. 2 आरा (बिहार)
3. अशोक के अभिलेख – डॉ. राजबली पाण्डे, ज्ञान मण्डल लि., वाराणसी (संस्करण –1965)
4. हेम प्राकृत व्याकरण – डॉ. उदयचन्द्र जैन, प्राकष्त भारती अकादमी, जयपुर
5. प्राकृत साहित्य का इतिहास – डॉ. जगदीस चन्द्र जैन, चौखम्भा प्रकाशन, वाराणसी।